

पैगंबर मुहम्मद के महान जीवन में पैगंबर होने का सूचना (2 का भाग 2): नबूवत के बाद

रेटगि:

वविरण:

श्रेणी: [लेख सबूत इस्लाम सत्य है मुहम्मद की पैगंबरी के सबूत](#)

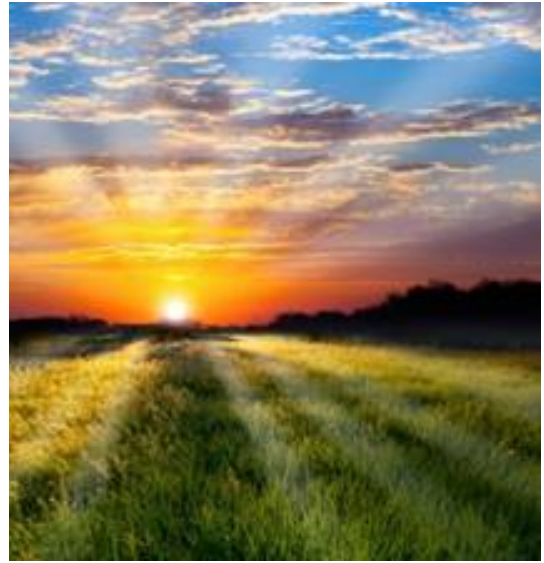
श्रेणी: [लेख पैगंबर मुहम्मद उनकी पैगंबरी के सबूत](#)

द्वारा: Aisha Stacey (© 2013 IslamReligion.com)

पर प्रकाशति: 04 Nov 2021

अंतमि बार संशोधति: 04 Nov 2021

40 साल की उम्र में, पैगंबर मुहम्मद एक स्थापति व्यापारी और पारिवारिक व्यक्ति थे, जो ध्यान और प्रतबिबि की अवधि से गुजरे। वह मक्का का एक सम्मानित नागरिक थे और लोग उनके पास विवादों को नपिटाने, सलाह लेने और अपने कीमती सामान देने तथा सुरक्षित रखने के लिए लोग उनके पास आते थे। हालाँकि यह सब बदलने वाला था क्योंकि उनके अलगाव और चित्त के एक समय के दौरान स्वर्गदूत जब्रैल ने उनसे मुलाकात की थी और कुरआन की आयतें (छंदें) उनके सामने प्रकट होने लगी थीं। उनका मशिन शुरू हो गया था; उनका जीवन अब उनका अपना नहीं था - यह अब इस्लाम के प्रचार के लिए समर्पित था।



शायद अब उसके जीवन की कुछ घटनाएँ समझ में आने लगी थीं। शायद वह देख सकते थे कि ईश्वर ने उनके लिए जनि चीजों की योजना बनाई थी, क्योंकि बीबी बातों की जांच में हम देख सकते हैं कि पैगंबर मुहम्मद के पूरे जीवन में कई पहलुओं और परस्थितियों में पैगंबर के संकेत दिखाई दे रहे थे। अपने लक्ष्य से पहले मुहम्मद का जीवन अपेक्षाकृत आसान था। उनकी शादी अच्छी और खुशहाल थी, वह बच्चे, बनिा वित्तीय चिता और नसिंसंदेह दोस्तों और परिवार से घरे थे जो उन्हें बहुत प्यार और उनका सम्मान करते थे।

अपने पैगंबरी की घोषणा करने के बाद वह जल्द ही गरीब हो गए, उनका सामाजिक बहिष्कृत किया गया और एक से अधिक अवसरों पर उसकी जान को खतरा भी था। महानता, शक्ति, धन और महिमा उनके दमिग से सबसे दूर की चीज थी। वास्तव में उनके पास ये चीजें पहले से ही थीं, भले ही वह छोटे स्तर पर थीं। झूठी भविष्यवाणी और मशिन की घोषणा करने से उसे कुछ हासिल नहीं होता है। पैगंबर मुहम्मद, उनके परिवार और उनके अनुयायियों का उपहास किया गया तथा शारीरिक रूप से परेशान किया गया, उनकी जीवन शैली सबसे खराब स्थिति में बदल गई।

मुहम्मद के साथियों में से एक ने कहा, “ईश्वर का पैगंबर ने उस समय से जब तक ईश्वर ने उन्हें (पैगंबर के रूप में) भेजा था, तब तक अच्छे आटे से बनी रोटी खाने के नसीब नहीं हुई थी।”^[1] एक अन्य ने घोषणा की कि “जब पैगंबर की मृत्यु हो गई, उन्होंने अपने सफेद खचर (सवारी के लिए), अपनी अस्त्र (हथियार) और भूमि के एक टुकड़े को छोड़कर जसिं उसने दान के लिए छोड़ दिया था, उसके पास न तो पैसा था और न ही कुछ और।”^[2]

अपनी मृत्यु से पहले, पैगंबर मुहम्मद एक साम्राज्य के नेता थे, राष्ट्रीय खजाने तक उनकी पहुंच थी, लेकिन वे सादगी से रहते थे, उन्होंने केवल अपने मशिन को पूरा करने और ईश्वर की पूजा करने पर ध्यान केंद्रित किया। पैगंबर, शक्ति, राजनेता, सामान्य, न्यायाधीश और मध्यस्थ के रूप में अपनी जमिंदारियों को बहुत अच्छी तरह से नभाते और उसके बावजूद मुहम्मद नबी अपनी बकरियों को दूध पिलाते थे, अपने कपड़े और जूते खुद ही साफ कर लेते थे, साथ ही सामान्य घरेलू काम में मदद करते थे।^[3] पैगंबर मुहम्मद का जीवन वनिम्रता और सादगी का एक उत्कृष्ट उदाहरण था। उनके पोशाक और जीवन शैली ने उन्हें उनके अनुयायियों से अलग नहीं किया। जब कोई सभा में जाता था तो पैगंबर मुहम्मद के बारे में ऐसा कुछ भी नहीं था जो उन्हें सभा में अन्य लोगों से अलग करता था।

अपने लक्ष्य के शुरुआती वर्षों में, सफलता की एक दूरस्थ संभावना से बहुत पहले, मुहम्मद को मक्का के नेताओं से एक दिलचस्प प्रस्ताव मिला। यह सोचकर कि मुहम्मद व्यक्तिगत लाभ के लिए पैगंबर के ये दावे कर रहे होंगे, एक दूत उनके पास आया और कहा “... यदि आप धन चाहते हैं, तो हम आपके लिए पर्याप्त धन एकत्र करेंगे ताकि आप हम में से सबसे अमीर बन सकें। यदि आप नेतृत्व चाहते हैं, तो हम आपको अपना नेता मानेंगे और आपकी स्वीकृति के बिना कभी भी किसी मामले पर निर्णय नहीं लेंगे। यदि आप एक राज्य चाहते हैं, तो हम आपको अपने ऊपर राजा बना देंगे...”। किसी भी इंसान के लिए, किसी भी ऐतिहासिक काल में इसे ठुकराना बहुत कठिन प्रस्ताव होगा; हालाँकि मुहम्मद को व्यक्तिगत लाभ या मान्यता की कोई इच्छा नहीं थी। हालाँकि इस उदार पेशकश के लिए केवल एक ही शर्त थी, यह वह थी जो उस हर चीज के विरुद्ध थी जिसके लिए अब मुहम्मद खड़े थे। मक्का के नेताओं को उम्मीद थी कि वह इस्लाम को छोड़ देंगे और बिना किसी हचिकचाहट के ईश्वर की इबादत करना बंद कर देंगे।^[4] पैगंबर मुहम्मद ने स्पष्ट रूप से इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया।

एक अन्य अवसर पर मुहम्मद के चाचा अबू तालबि को अपने भतीजे की जान का डर था और तब उनके चाचा उनसे लोगों को इस्लाम में बुलाना बंद करने की भीख मांगी। फरि से मुहम्मद का जवाब नरिणायक और ईमानदार था, उन्होंने कहा, "मैं ईश्वर के नाम की कसम खाता हूँ हे चाचा! बात (लोगों को इस्लाम में बुलाने की), मैं तब तक नहीं रुकूंगा जब तक कथिा तो ईश्वर इसे जीत नहीं लेते या मैं इसका बचाव करते हुए नष्ट नहीं हो जाता।"^[5]

मक्का के बुतपरस्त लोगों ने मुहम्मद के चरतिर को कलंकति करने और उस संदेश को छोटा करने के लएि कई उपाय कएि जसि को वह (पैगंबर मुहम्मद) फैलाने की कोशशि कर रहे थे। कुरआन की नदिा करते समय वे वशिष रूप से नरिदयी थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि कुरआन दैवीय रूप से प्रकट नहीं हुआ था और मोहम्मद ने इसे स्वयं लिखा था। यह लोगों को मुहम्मद का अनुसरण करने या ईश्वर के पैगंबर होने के उनके दावे पर वशिवास करने से हतोत्साहति करने के लएि कथिा गया था। पैगंबर मुहम्मद ने कुरआन नहीं लिखा था। वह एक अनपढ व्यक्ती, पढने या लिखने में पूरी तरह से असमर्थ थे। वह कुछ वैज्ञानकि तथ्यों को जानने या अनुमान लगाने में भी असमर्थ थे जनिका कुरआन आसानी से और अक्सर उल्लेख करता है।

इसके अलावा यह कहना भी समझ में आता है कि अगर कुरआन मुहम्मद द्वारा लिखा गया होता तो वह प्रशंसा करते और खुद का बहुत अधिक उल्लेख करते। कुरआन वास्तव में पैगंबर मुहम्मद का उल्लेख करने की तुलना में पैगंबर यीशु और मूसा दोनों का कई बार नाम से उल्लेख करता है। कुरआन भी पैगंबर मुहम्मद को फटकार और सुधारता है। क्या एक धोखेबाज पैगंबर खुद को एक ऐसे व्यक्ती की तरह दखिाने का जोखमि उठाएगा जो गलतियों कर सकता है?

पैगंबर मुहम्मद एक अनपढ अरब व्यापारी थे। उनका जीवन अचूक हो सकता है, सविय इसके कि उनके अस्ततिव की शुरुआत से ही ईश्वर उनके साथ थे, उन्हें भवषियवाणी के लएि तैयार कर रहे थे और पूरी मानवता को धार्मकि वकिस के एक नए युग में मार्गदर्शन करने के लएि तैयार कर रहे थे। जैसे-जैसे मुहम्मद बड़े हुए, वे सच्चे, ईमानदार, भरोसेमंद, उदार और ईमानदार होने लगे। वह बहुत आध्यात्मकि होने के लएि भी जाने जाते थे और लंबे समय से अपने समाज के खुले वरिीध और मूरतपूजा से घृणा करते थे।

जब हम पैगंबर मुहम्मद के जीवन को दूर से देखते हैं तो हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं कि उनका जीवन में से ईश्वर की सेवा मुख्य था, उनका एकमात्र उद्देश्य संदेश देना था। संदेश का भार उसके कंधों पर भारी पड़ा और यहां तक कि अपने अंतिमि भाषण पर भी वह चतिति होकर भाषण दे रहा था और लोगों से यह प्रमाणति कर रहा था कि उसने ईश्वर का संदेश पूरण रूप से आम जनता तक सुरक्षति रूप में पहुंचा दथिा था। यदि मुहम्मद को सत्ता या प्रसदिधि चाहिए होती तो वह मक्का के नेता होने के प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते। यदि वह धन की तलाश में होते तो वह एक साम्राज्य के किसी अन्य

शक्तशाली नेता के विपरीत, एक साधारण जीवन नहीं जीता होता, बमुश्किल किसी भी संपत्ति के साथ मरता। पैगंबर मुहम्मद के जीवन की सादगी और इस्लाम के संदेश को फैलाने की उनकी अटूट इच्छा पैगंबर के लिए उनके दावे की वैधता के मजबूत संकेत हैं।

फुटनोट:

[1]

???? ?? ???????

[2]

पूर्वोक्त

[3]

???? ??-???????, ????? ??????

[4]

अल-सेरा अल-नबावेय्याह, इब्न हशाम, खंड 1.

[5]

पूर्वोक्त।

इस लेख का वेब पता:

<https://www.islamreligion.com/hi/articles/10309>

कॉपीराइट © 2006-2020 सभी अधिकार सुरक्षित हैं। © 2006 - 2023 IslamReligion.com. सभी अधिकार सुरक्षित हैं।